बरसात की एक रात

लेखिका: आदिती

बहुत देर हो चुकी थी उस रात को ऑफिस से निकलते हुए। मैंने जल्दी–जल्दी अपनी साड़ी ठीक की और ऑफिस का दरवाज़ा बंद कर के चलीा। मेरी कार पार्किंग में दूर अँधेरे कौने में अकेली खड़ी हुई थी। बहुत ज़ोरों से बारिश हो रही थी और बादल भी जम कर गरज रहे थे। मैं पूरी तरह भीग चुकी थी और ठंडे पानी से मेरे ब्लाऊज़ के अंदर मेरे निप्पल एकदम टाईट हो गयी थी। मेरा ब्लाऊज़ मेरे खिले हुए जोबन को ढाँकने की नाकामयाब कोशिश कर रहा था। मेरे १/३ मम्मे ब्लाऊज़ के लो–कट होने की वजह से और साड़ी के भीग जाने से एकदम साफ़ दिख रहे थे। मैंने साढ़े चार इन्च ऊँची हील के सैण्डल पहने हुए थे और पानी मे फिसलने के डर से धीरे–धीरे चलने की कोशिश कर रही थी। हवा भी काफ़ी तेज़ थी और इस वजह से मेरा पल्लू इधर उधर हो रहा था जिसकी वजह से मेरी नाभी साफ़ देखी जा सकती थी। मैं आम तौर पे साड़ी नाभी के ३–४ ऊँगली नीचे पहनती हूँ। पूरी तरह भीग जाने की वजह से, मैं वास्तव में नंगी दिख रही थी क्योंकि मेरी साड़ी मेरे पूरे जिस्म से चिपक चुकी थी। ऊपर से मेरी साड़ी और पेटीकोट थोड़े बहुत पारदर्शी थे।

मैं जितनी जल्दी–जल्दी हो सका, अपनी कार के पास पहुँची। मुझे मेरे आसपास क्या हो रहा था उसका बिल्कुल एहसास ही नहीं था। मैंने देखा कि मेरी वोह अकेली ही कार पार्किंग लॉट के इस हिस्से में थी और वहाँ घना अँधेरा छाया हुआ था। बारिश एकदम ज़ोरों से

बरस रही थी। मैं कॉर्नर पे मुड़ी और अपनी कार के पास आ के अपनी पर्स में से चाबी निकालने लगी। अचानक किसी ने मुझे एक जोर का धक्का लगाया और मैं अपनी कार के समने जा टकराई।

"हिलना मत कुत्तिया!"

मुझे महसूस हुआ कि किसी ताकतवर मर्द का जिस्म मुझे मेरी कार की तरफ़ पुश कर रहा था। उसका पुश करने का ज़ोर इतना ताकतवर था कि उसने मेरे फेफड़ों से सारी हवा निकाल दी थी जिसकी वजह से मैं चिल्ला भी ना सकी। मैं एक दम घबरा गयी। बारिश इतनी तेज़ हो रही थी कि आसपास का बिल्कुल दिखाइ नहीं दे रहा था। और जहाँ मेरी कार खड़ी हुई थी वहाँ मुझे कोई देख नहीं सकता था। वोह आदमी मुझे हर जगह छूने लगा। उसके हाथ बहुत मजबूत थे... मानो लोहे के बने हों। उसने मेरा पल्लू खींच के निकाल दिया और मेरे मम्मों को जोर–जोर से दबाने लगा और मेरी पहले से टाईट हो चुके निप्पल को मसलने लगा।

वोह गुर्राया। उसकी इस आवाज़ ने मानो मुझे बेहोशी में से उठाया हो और मैंने भागने की नाकाम कोशिश की। फिर उसने मेरे एक मम्मे को छोड़ के मेरे गीले हो चुके बालों से मुझे खींचा।

आआहहहहह...।" मैं जोर से चिल्लाई और मैंने उसके सामने लड़ना बंद कर दिया।

"अगर तू ज़िंदा रहना चाहती है तो... ठीक तरह से पेश आ! समझी

कुत्तिया... अभी मैं तुझे अपनी तरफ़ धीरे से मोड़ रहा हूँ... अगर ज़रा भी होशियारी दिखायी तो....।!"

उसने मुझे धीरे से अपनी तरफ़ मोड़ा। इस दौरान उसने अपना बदन मेरे बदन से सटाए रखा। उसका लंड मेरे गीले बदन को घिस रहा था, और मेरी चूत में थोड़ी सरसराहट हुई। "आई कैन नॉट बी टर्नड ऑन बॉय दिस" मेरे जहन में ये सवाल उभरा। मैंने ऊपर देखा। मैंने इस बार उसे पहली बार देखा। वोह एक लम्बा चौड़ा और काला आदमी था। उसने अपने शरीर पर एक पैंट और सर पर टोपी के अलावा कुछ नहीं पहना था। उसके शरीर का गठन मुझे किसी बॉडी–बिल्डर की याद दिला गया। वोह एकदम काला और डरावना था और ऐसी अँधेरी रात में मुझे सिर्फ़ उसकी आँखें और उसके काले जिस्म पे दौड़ती हुई बारिश की बूँदें ही नज़र आती थी। मैं डर से थर–थर काँपने लगी। मेरे इतनी ऊँची हील के सैण्डल पहने होने के बवजूद वोह करीबन मुझसे १ फुट लम्बा था। मैं उससे दया की भीख माँगने लगी।

"प्लीज़... प्लीज़ मुझे मत मारो।"

तभी एक जोरदार थप्पड़ मेरे गाल पे आ गिरा। मुझे तो ऐसा लगा कि मुझे तारे दिख गये। उसने मुझे मेरे बालों से करेबान अपने मुँह तक ऊपर खींचा।

प्लीज़ मुझे जाने दो...। मैं तुम्हें जो चाहो वोह दे दूँगी... देखो मेरे पर्स में पैसे हैं... तुम वोह सारे के सारे ले लो..." मैं गिड़गिड़ायी।

वोह मेरे सामने जोर–जोर से हँसने लगा और बोला "देख... हरामजादी मुझे तेरे पैसे नहीं चाहिये... मुझे तो तेरी यह कसी हुई टाईट चूत चाहिये... मैं तेरी इस चूत को ऐसे चोदूँगा कि तु ज़िन्दगी भर किसी दूसरे मर्द क लंड नहीं माँगेगी"

उसकी बातों से मुझे तो मानो किसी साँप ने सूँघ लिया हो ऐसी हालत हो गयी। तभी मुझे खयाल आया के मेरा बलातकार होने वाला है। मैं बहुत घबरा गयी थी और पता नहीं चलता था कि मैं क्या करूँ। बारिश अभी भी पूरे जोरों से बरस रही थी और बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक ने पूरे आकाश को भर लिया था।

मेरे बाल बारिश की वजह से बहुत भीग चुके थे और वोह मेरे चेहरे को ढक रहे थे। तभी उस काले लम्बे चौड़े आदमी ने मुझे कार के हुड पे खींचा। उसके मुझे इस तरह ऊपर खींचने से मेरी भीगी हुई साड़ी मेरी गोरी–गोरी जाँघों तक ऊपर खिंच गयी।

"पीछे झुक... पीछे झुक ... हरामजादी!" वोह गुर्राया।

मैं ज़रा भी नहीं हिली। वोह तिलमिला गया और मेरे नज़दीक मेरे चेहरे के पास आके एकदम धीरे से लेकिन डरावनी आवज में बोला "मैं तेरी हालत इस से भी बदतर बना सकता हूँ... साली राँड!" और मुझे एक धक्का देकर कार के बोनेट पर लिटा दिया। इस के साथ ही उसने अपना हाथ मेरी साड़ी के अंदर मेरी फ़ैली हुई जाँघों के बीच डाल दिया और झट से मेरी पैंटी फाड़ के खींच निकाली। मेरी पैंटी

के चीरने की आवाज़ बारिश और बिजली की गड़गड़ाहट के बीच अँधेरी रात में दब गयी। अब वोह मेरी दोनों टाँगों को अपने मजबूत हाथों से पूरे जोर और ताकत से फ़ैला रहा था। कुछ पल के लिए मुझे लगा कि मैं कोई बुरा सपना देख रही हूँ और यह सब मेरे साथ नहीं हो रहा है। पर मैं जल्दी ही असलियत में वापस आ गयी जब वोह फिर से गुर्राया। उसने अब अपना एक हाथ मेरे पीछे रखा और मेरी कसी हुई गीली चूत में अपनी दो मोटी उँगलियाँ घुसेड़ दी। मैं फिर चिल्ला उठी लेकिन इस बार भी मेरी चीख बारिश और बिजली की गड़गड़ाहट के बीच दबकर रह गयी। वोह जरा भी वक्त गंवाये बिना मेरी चूत में ज़ोर ज़ोर से ऊँगलियाँ अंदर बाहर करने लगा। मेरी चूत में उसके हर एक धक्के से मेरे निप्पल और ज्यादा कड़क होने लगे। मेरी चूत में अपनी उँगलियों के हर एक धक्के के साथ वोह गुर्राता था। मेरा डर मेरी चूत तक नहीं पहुँचा था और मेरी चूत में से रस झड़ने लगा, जैसे कि चूत भी मेरी बलातकारी की मदद कर रही थी।

"हे भगवान बहुत दर्द हो रहा है," मैंने अपने आप को कहा और अचानक मैं सातवें आसमान पे थी "ओहह भगवान नहींईईईईई.... प्लीज़" और मेरी चूत उसकी उँगलियों के आसपास एकदम टाईट हो गयी। मैंने अपनी आँखें बँद कर लीं और मेरी आँखों से आँसू मेरे चेहरे पे आ गये। बारिश की ठँडी बूँदों में मिल कर वोह बह गये। वोह ज़ोर ज़ोर से मेरी गीली चूत में उँगलियाँ अंदर बाहर कर रहा था। हर बार जब वोह अपनी उँगलियाँ मेरी चूत के अंदर डालता था तो मैं चरम सीमा के नज़दीक पहुँच जाती थी। उसकी ताकत लाजवाब थी। हर बार वोह मुझे मेरी गाँड पकड़ के ऊपर करता था

और अपनी उँगलियाँ मेरी गीली चूत में जोर से घुसेड़ता था जो अब चौड़ी हो चुकी थी। मेरा सर अब चक्कर खा रहा था और मैं थोड़ी बेहोशी महसूस कर रही थी। मुझे यह पता नहीं था कि वाकय यह उसकी ताकत थी या फिर मेरी मदहोश चूत थी जो बार–बार मेरी गाँड को ऊपर नीचे कर रही थी। मैंने बहुत चाहा कि ऐसा ना हो। तभी उसने अपना अँगूठा मेरी क्लिट पे रख कर दबाया। एक झनझनाहट सी हो गयी मेरे तन बदन में मेरी चूत की दीवरें सिकुड़ गयीं और मैं एकदम से झड़ गयी। आनंद का पूरा बवँडर मेरे तन बदन में समा गया। मैं बहुत शरमिंदगी महसूस करने लगी। कैसे में अपने आप को ऐसी उत्तेजना महसूस करवा सकती थी जब वोह आदमी मेरे साथ जबरदस्ती कर रहा था? मैं अपने आप को एक बहुत गंदी और रंडी जैसा महसूस करने लगी। मैंने उसका हाथ पकड़ के उसे रोकना चाहा तो वोह मेरे सामने देख कर हँसने लगा। वोह जानता था कि मैं झड़ गयी हूँ।

"तुम एकदम चालू किस्म की औरत हो... क्यों? तुम तो राँड से भी बदतर हो... है ना? तुम्हें तो अपने आप पे शरम आनी चाहिए" वोह अपने आप से आशवस्त होते और हँसते हुए बोला। वोह सच बोल रहा था। मेरा सर शरम के मारे झुक गया और मैंने अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया और रोने लगी। झड़ने की वजह से मेरे शरीर में अजब सी चुभन पैदा हो गयी थी और बारिश की ठंडी बूँदें मेरे जिस्म को छेड़ रही थी। ठंडी हवा की वजह से मेरा पूरा बदन काँप रहा था। मैं सचमुच उस वक्त एक बाजारू रंडी के समान लगती होऊँगी। अचानक उसने मुझे धक्का दिया और मेरा हाथ पकड़ के मुझे घुटनों के बल बिठा दिया।

"अब मेरी बारी है रंडी और तु जानती है मुझे क्या चाहिए... है ना? तु जानती है ना?" मैं जानती थी वोह क्या चाहता था जब उसने मेरे कन्धे पकड़ के मुझे घुटनों के बल बिठा दिया था। मेरा नीचे का होंठ काँपने लगा था। मैंने अपने गीले बाल अपने मुँह से हटाए और शरम से अपना सर हिलाया। मेरा दिमाग ना कह रहा था लेकिन मेरा दिल उसे देखने को बेताब था। जब मैं अपने घुटनों पे थी तब मैंने उसके सामने अपना मुँह उठाया और मौन तरीके से मुझे जाने देने की प्रार्थना की। पर जब मैंने उसकी आँखों में देखा तब मुझे एहसास हो गया कि उसे जो चाहिए वोह मिलने से पहले वोह मुझे नहीं जाने देगा। मेरे हाथ काँपने लगे जब मैंने उसकी पैंट की ज़िप को खोलना शुरू किया। उसका लंड इतना टाईट था कि उसकी पैंट की ज़िप तो पहले से ही आधी नीचे आ गयी थी। मैंने उसकी बाकी की ज़िप नीचे उतार दी और फटाक से उसका तन्नाया हुआ काला लंड मेरे सामने नाग की तरह आ गया। उसका लंड वाकय में काफ़ी बड़ा था... तकरीबन नौ–साड़े नौ इन्च का होगा। और उसका लंड काफ़ी मोटा भी था... शायद तीन इन्च होग, और एकदम काला मनो सीसम से बना हुआ हो। शायद ऐसा तो किसी आम मर्द का नहीं होगा, कम से कम मैंने तो वास्तव में इतना लम्बा और मोटा लंड नहीं देखा था तब तक।

"तुम अब इस लंड से प्यार करना सीखोगी मेरी राँड... सीखोगी ना?" उसने मुझसे पूछा। मैं घबरा गयी थी उसके लंड की लम्बाई और मोटाई देख कर लेकिन फिर भी उसके लंड कि तरफ़ आकर्षित हो गयी थी। मेरे कपड़े ज़ोरों की बारिश की वजह से मेरे बदन से

चिपक गये थे और मेरे मम्मों का शेप एकदम साफ़ दिखायी दे रहा था। ब्रा भी मेरी टाईट हुए निप्पलों को नहीं ढक पा रही थी। मैं बारिश की बूँदों को उसके लंड के ऊपर गिरते हुए देख रही थी। इतना ठंडा पानी गिरने पर भी उसका लंड एक मजबूत खम्बे की तरह तना हुआ था। मुझे एसा लगा कि वक्त मानो ठहर गया हो और मेरे आजू-बाजू सब कुछ स्लो-मोशन में हो रहा हो। उसके लंड का मोटा सुपाड़ा मेरे मुँह से सिर्फ़ तीन इन्च की दूरी पर था।

उसके लंड को अपने आप झटके खाते देखने की वजह से मानो मैं तो सम्मोहित सी हो गयी थी। मेरी जीभ अचानक ही मेरे मुँह से बाहर आ गयी और मेरे नीचे वाले होंठ पे फिरने लगी। मैं बहुत घबराई हुई और कनफ़्यूज़्ड थी। मेरा दिल कह रहा था कि मैं उसके मोटे लंड को चूस लूँ पर दिमाग कह रहा था कि मैं अपने इस हाल पे रोना शुरू करूँ। अपने लंड को हाथ में हिलाते हुए वोह बोला "ए राँड चल जल्दी मेरा लंड चूस... देख अगर तूने अच्छी तरह चूस के मुझे खुश कर दिया तो मैं तुझे तेरी कसी हुई चूत में अपना लंड डाले बिना ही छोड़ दूँगा। अगर तू यह चाहती है कि मेरा यह लंड तेरी कसी हुई चूत को फाड़ के भोंसड़ा ना बनाये तो अच्छी तरह से मेरा लंड चूस... वरना उसकी कसम मैं तेरी चूत को चोद-चोद के उसका ऐसा भोंसड़ा बना दूँगा कि तू एक महीने तक ठीक तरह से चल भी नहीं पायेगी"

मैं तो उसके एक एक शब्द को सुन कर सन्न रह गयी। उसका लंड बहुत बड़ा लग रहा था। मुझे तो यह भी पता नहीं था कि मैं उसके लंड का सुपाड़ा भी अपने मुँह में ले पाऊँगी भी कि नहीं। उसके

लंड को देखते हुए मैं अपने विकल्पों के बारे में सोचने लगी। मैं एक दो पल के लिए उसने जो कहा उसके बारे में सोचने के लिए ठहरी कि अचानक उसने थाड़ से मेरे गाल पे अपने पथरीले हाथ से फटकारा। मुझे तो मानो दिन में तारे दिख गये हों, ऐसी हालत हो गयी।

"चूसना शुरू कर.... रंडी.. साली मादरचोद मेरे पास पूरी रात नहीं है"

उसका लंड मेरी कसी हुई चूत को फाड़ रहा है... वही सीन सोच के मैं डर गयी और साथ-साथ उत्तेजित भी हो गयी। पर आखिर में जीत डर की ही हुई। मैंने फ़ैसला कर लिया कि कुछ भी हो, मैं अपने जिस्म को और मुशकिल में नहीं डलूँगी और उसका लंड चूस दूँगी। मैंने जल्दी से उसके लंड को निचले सीरे से पकड़ा। वोह बारिश की वजह से एकदम गीला हो चुका था लेकिन जैसा मैंने पहले बताया कि बारिश के ठंडे पानी का उसके लंड पर कोई असर नहीं था। वोह चट्टान की तरह तना हुआ और लोहे की तरह गरम था। मैंने धीरे धीरे अपनी जीभ बाहर निकल के उसके लंड के सुपाड़े के ऊपर फ़िराना शुरू किया।

"मम्म्म्म... वाह वाह मेरी राँड वाह... डाल ले इसे अपने मुँह में... डाल साली राँड डाल"

मैंने जितना हो सके उतना अपना मुँह फ़ैला के उसके लंड के सुपाड़े को अपने मुँह में डाल दिया और धीरे-धीरे स्ट्रोक करना शुरू कर

दिया। उसके लंड के सुपाड़े ने मेरा पूरा मुँह भर दिया था। उसने अपना सर थोड़ा पीछे की तरफ़ झुकाया और मेरे गीले बालों में अपनी उँगलियाँ फिराने लगा।

"वाह...वाह मेरी रंडी.... बहुत खूब... चूस इसे... चूस मेरा लंड आहहहह... तू तो बहुत चुदासी लगती है... आहहह... बहुतों के लंड लिए लगते हैं तूने... उम्म्म्म" वोह गुर्राया।

उसकी हवस अब मेरे बदन में वासना बन के दौड़ने लगी थी। उसका लंड चूसने की चाहत ने मेरी वासना को छेड़ दिया था। मेरे बदन में उसकी शक्ती सैलाब बन के दौड़ने लगी। इस मोड़ पे मुझे उसका लंड चूसने की बेहद इच्छा हो गयी और मैं उसका लंड बहुत बेसब्री से चूसना चाहती थी। पता नहीं कि मैं जल्दी निपटा के उससे छुटकारा पाना चाहती थी या यह मेरी हवस थी जो मुझे ऐसा करने पर मजबूर कर रही थी। मैं फिर से कनफ़्यूज़ हो गयी और खुद की नज़रों में फिर से गिर गयी।

धीरे से मैंने उसके लंड को अपने मुँह में और अंदर घुसेड़ लिया और उसके कुल्हों को अपनी तरफ़ खींचा। अभी भी एक मुठ्ठी जितना लंड मेरे हाथों में था और तब मुझे महसूस हुआ कि उसके लंड क सुपाड़ा मेरे गले तक आ गया है। थोड़ा सहारा लेने के लिए मैं कार तक पीछे हटी। उसने अब मेरे सर को दोनों हाथों से पकड़ लिया। अब वोह अपना बड़ा सा लंड मेरे मुँह के अंदर–बाहर करके मेरे मुँह को चोदने लगा। अब वोह अपने हर एक धक्के के साथ अपना पूरा लंड मेरे गले के नीचे तक पहुँचाने की कोशिश कर रहा था। उसके

दोनों हाथों ने मेरे चेहरे को कस के पकड़ रखा था।

"आहहह... आहहहह रंडी... ले और ले... और ले... पूरा ले ले मेरा लंड मुँह में... खोल थोड़ा और खोल अपना मुँह साली राँड"

वोह अब जोर जोर से मेरे मुँह को चोद रहा था। उसके झटकों में तूफ़ानी तेजी थी। हर एक बार वोह अपना लंड मेरे हलक तक ले जाता था और रूक जाता था और मैं बोखला जाती थी। कईं बार साँस लेना भी मुश्किल हो जाता था। फिर वोह धीरे से अपना लंड वापस खींचता और घुसेड़ देता। मैंने उसके लंड को मानो ऑक्सीज़न कि नाली हो, उस तरह से पकड़ के रखा था ताकि उससे मुझे ज्यादा घुटन ना हो। मैंने उसके लंड को अपनी जीभ और होठों से उक्सा दिया था और अपने होठों और जीभ को एक लंड चूसने में निपुण औरत की तरह से इस्तमाल किय। अचानक उसने मेरे दोनों हाथ कस के पकड़ के उन्हें हवा में उठा लिया और एक जोर का झटका अपने लंड को दिया। मेरा सर कार के दरवाज़े से टकराया और उसका लंड सड़ाक से मेरे हलक में जा टकराया।

"आआआघघहहहह. आआहहह रंडीडीडीडी आज तुझे पता चलेगा कि काले लंड क्या होते हैं"

मेरा पूरा जिस्म एकदम टाईट हो गया। मेरा नाक उसकी झाँटों में घुस चुका था जिसकी खुशबू से मैं मदहोश होती चली जा रही थी और उसके टट्टे मेरी चिन के साथ टकरा रहे थे। उसका पूरा लंड मानो मेरे मुँह के अंदर था और उसका दो–तिहाई लंड मेरे गले में आ अटका

था। मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी कि कोई इन्सान इतनी बड़ी चीज़ अपने गले में उतार सकता है। अब वोह एक भूखे शेर की तरह अपना लंड मेरे मुँह के अंदर–बाहर कर रहा था और जितना हो सके उतना ज्यादा अपना लंड मेरे गले तक डालने की कोशिश कर रहा था। जब–जब वोह अपना लंड मेरे गले में घुसेड़ता था तब–तब मेरा सर मेरी कार के दरवाजे से टकराता था। मैं जानती थी आगे क्या आनेवाला था और इसके लिए मैं खुद ही जिम्मेवार थी। उसके लंड को मेरे गले तक जाने से कोई नहीं रोक सकता था। तेज़ बारिश में मुझे सिर्फ़ दो ही आवाज़ें सुनाई दे रही थीं – एक तो मेरे सर के कार के दरवाज़े से टकराने की और दूसरी मेरे गले से आनेवाली आवाज़ की... जब उसका लंड मेरे गले तक पूरा चला जाता था तब की। फिर उसने मेरे हाथ छोड़ दिए और मैंने मौका गँवाए बिना उसके लंड को पकड़ लिया। उसने अब अपना लंड मेरे गले तक डालने के बजाये मेरे मुँह में ही रखा और मुझे तेज़ी से अपना लंड चूसने को कहा। बारिश अभी भी तेज़ हो रही थी लेकिन मैं अब ठंडी नहीं थी। मैं भी गरम हो चुकी थी। मेरी दो उँगलियाँ अपने आप मेरी चौड़ी हुई चूत से अंदर बाहर हो रही थीं।

मेरा बर्ताव बिल्कुल एक राँड के जैसा था। मुझे मालूम नहीं था मैं ऐसा क्यों कर रही थी। मैं कैसे किसी अजनबी का लंड चूसते हुए अपनी चूत को सहला सकती हूँ? लेकिन मैं अपनी चूत को सहलाये बगैर और अपनी उँगलियाँ उसके अंदर बाहर करने से नहीं रोक पा रही थी। मेरे जहन में यह भी सवाल उठा कि मैं क्यों अपनी चूत को सहला रही हूँ जब यह आदमी मेरा रेप कर रहा है... और अपना लंड जब वोह मेरे गले में डाल चुका है। उसने अब अपने कुल्हों को

झटके देना बँद कर दिया था लेकिन उसका पूरा चार्ज मैंने ले लिया और उसका लंड तेज़ी से चूसने लगी और जितना हो सके उतना लंड अपने मुँह में लेने लगी। मैंने उसकी गीली पैंट को जाँघों से पकड़ा और जितना हो सके उतना उसके लंड को अपने गले तक लेने लगी... उतना नहीं जितना वोह डालता था लेकिन जितना मैं ले सकती थी उतना... मानो मैंने किसी का लंड लिया ही ना हो... उस तरह जैसे कि एक रंडी करती है, उस तरह। फिर उसने कहा, "आहहघघ आहहहघघहह रंडी मैं झड़ने वाला हूँ।" मैंने पहले भी कई लंड चूसे हैं लेकिन किसी को अपने मुँह के अंदर नहीं झड़ने दिया था और मैं नहीं चाहती थी कि यह आदमी उस काम के लिए मेरी ज़िंदगी में पहला मर्द बने। वोह मेरे मुँह में झड़नेवाला है, उस खयाल से मैं बहुत घबरा गयी। मैंने अपने मुँह से उसके काले लंड को निकालने की बहुत कोशिश की लेकिन ऐसा हुआ नहीं बल्कि वोह और उत्तेजित हो गया। उसने फिर अपने कुल्हों को झटका और मुझे मेरी कार के दरवाज़े से सटा दिया और पूरे जोर से अपना काला मोटा और लम्बा लंड मेरे गले में सटा दियाआआ और झड़ गया।

"आघघहह आघघहह... आआहहह... लेले मेरा रस ले राँड ले मेरा रस ..।" और उसका पहला माल सीधा मेरी हलक से नीचे उतर गया। मैंने बहुत कोशिश की कि उसका लंड मेरे मुँह से बाहर निकल जाये लेकिन उसकी बे–इंतहा ताकत के सामने मैं नाकामयाब रही और वोह झटके देता गया और उसका रस मेरे हलक से नीचे उतर गया। उसने अपना पूरा रस झड़ने तक अपना लंड मेरे हलक में घुसेड़े रखा ताकि उसका जरा भी रस बाहर ना गिरे। अपने आप को

आश्वस्त पाके उसने थोड़ा ढील छोड़ा और अपना लंड मेरे गले से बाहर निकाला। उसके बाद जाके मैं कुछ साँस ले पायी।

"ले साली पी... पी साली मेरा रस... पी राँड मुझे पता है तुम साली सभी औरतों को बहुत माज़ा आता है लंड चूसने में... ले मेरा लंड चूस के उसका रस पी... पी साली मादरचोद" उसका रस अभी भी उसके लंड से बाहर निकल रहा था। धीरे से उसने अपना ढीला हुआ लंड मेरे मुँह से निकाला। राम कसम, उसका ढीला हुआ लंड भी मेरे पती के तने हुए लंड से बड़ा था। जब उसने अपना लंड निकाला तब मैंने चैन की साँस ली। उसके रस ने मेरे सारे चेहरे को ढक दिया था और ठंडा पानी मेरे चेहरे से उस रस को धो रहा था। मैं थक के सिकुड़ कर जमीन पे बैठ गयी।

"क्या बात है तुझे मेरा लंड चूसना अच्छा नहीं लगा?"

मैं उसे गुस्सा नहीं करना चाहती थी। इसलिए मैंने सिर्फ़ उसकी और देख के अपना सर हिलाया। मैंने क्यों उसे "हाँ" कहा। मुझे नहीं पता कि यह सच था कि नहीं? मेरे गले में बहुत दर्द हो रहा था और उसके रस का स्वाद अब भी मेरी जीभ में था। बारिश अभी भी उसी तेज़ी से बरस रही थी। बारिश की बूँदें अब बहुत बड़ी हो गयी थी। मैंने उसकी और देखा और वोह मुस्कुरा रहा था। मुझे उसके सफ़ेद दाँतों के सिवा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। मैं तो जैसे कोई हॉरर–मूवी देख रही हूँ ऐसा हाल था।

"प्लीज़... क्या मैं अब जा सकती हूँ..." मैंने काँपते हुए कहा,

"प्लीज़ मुझे जाने दो। तुमने जो कहा मैंने वोह कर दिया है... प्लीज़ अब मुझे जाने दो..."

वोह मेरे सामने देख कर हँस पड़ा। मैं अपने आप को बहुत बे-इज्जत समझने लगी। मुझे ज्यादा शरमिंदगी तो इस बात से हुई कि मेरे बदन ने उसके हर एक मूव को रिसपॉन्ड किया था। ऐसा क्यों हुआ? मेरी चूत अभी भी सातवें आसमान के समँदर में झोले खा रही थी और मेरे मम्मे अभी तक टाईट थे और निप्पल तो जैसे नोकिले काँटों की माफ़िक थे।

"क्या नाम है तेरा...?" उसने पूछा।

मैंने सहमी हुई आवाज़ में कहा "आदिती"।

फिर वोह बोला "आदिती... बड़ा प्यरा नाम है..और तू तो उससे भी ज्यादा प्यारी है तुझे लगता है मैं तुझे यूँ ही छोड़ दूँगा?"

“लेकिन तुमने कहा था अगर मैं तुम्हारा लंड चूस दूँगी तो तुम मुझे जाने दोगे" मैं जल्दी-जल्दी बोल गयी। मैंने उसके चेहरे के सामने फिर देखा और मेरी नज़र उसके लंड की तरफ दौड़ गयी। मैं तो एकदम भोंचक्की रह गयी... उसका लंड तो गुब्बारे की तरह तन कर फूल रहा था और एक दो सेकंड के अंदर तो लोहे के बड़े डँडे की तरह टाईट हो गया। "हाय राम यह अभी खतम नहीं हुआ भागो आदिती" मैंने अपने मन में कहा। अपनी सारी ताकत और हिम्मत समेटे हुए मैं खड़ी हुई और मैंने भागने के लिये कदम बढ़ाया।

अचानक उसने मेरे सर के बालों को पकड़ के मुझे अपनी और खींचा।

"कहाँ जा रही है कुत्तिया आदिती अब तो तू मेरी राँड है... मेरे कहने से पहले तू यहाँ से नहीं जा सकती" वोह गुस्से से दहाड़ा। अब उसने मेरी एकदम टाईट चूंचियों को मसलना शुरू कर दिया और देखते–देखते मेरा ब्लाऊज़ फाड़ दिया और मेरे बदन से खींच निकला। अब मैं सिर्फ़ ब्रा में थी जो मुशकिल से मेरी चूंचियों को अपने अंदर समाये हुई थी। मेरी चूचियों को महसूस करते ही वोह तो पागल सा हो गया और ऐसे मसलने लगा कि जैसे ज़िंदगी में ऐसी चूचियाँ देखी ही ना हों। वोह पागलों की तरह मेरी चूचियों को मसल रहा था और बीच–बीच में वोह मेरी निप्पलों को ज़ोर–ज़ोर से पिंच करता था और मेरे गले के इर्द–गिर्द दाँतों से काटता था। मेरे बदन पे अब सिर्फ़ एक साड़ी और पेटीकोट था वोह भी कमर के नीचे। ऊपर तो सिर्फ़ ब्रा थी और साड़ी भी कैसी... पैंटी तो पहले ही उस कमीने ने फाड़ के निकाल फेंक दी थी। बारिश के ठंडे पानी में इतनी देर रहने के कारण मेरे सैंडलों के स्ट्रैप मेरे पैरों में काट रहे थे।

"कहाँ जा रही थी रंडी... तुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था... आदिती रानी... मैं तुझसे कितनी अच्छी तरह से पेश आ रहा था... इस तरह से किसी का शुक्रिया अदा किया जाता है... अब तुम्हारी इस हरकत ने देखो मुझे पागल बना दिया है"

फिर उसने मेरे मुँह को पकड़ के कार के हूड से पटका।

"आआआआआहहहहह" मैं दर्द से मर गयी और मेरी पूरी ताकत हवा हो गयी। फिर उसने मुझे दबोचे हुए ही मेरी टाँगों के बीच में एक लात मार के मेरी टाँगों को फैला दिया और मेरी साड़ी खींच कर निकाल दी और पेटीकोट कि नाड़ा पकड़ के खींचा और पेटीकोट नीचे गिर गया। अब तो मैं सिर्फ़ ब्रा और हाई हील सैंडल पहने हुए बिल्कुल नंगी उस बरसात में वहाँ खड़ी थी। अभी भी वोह मेरी चूचियों को ज़ोर–ज़ोर से मसलता जा रहा था और ब्रा के कप नीचे खिसका कर उसने चूचियों को आज़ाद कर दिया था। मेरी चूचियाँ एकदम लाल हो के टाईट हो गयी थी...मनो वोह भी अपने मसले जाने क लुत्फ उठा रही हों। पूरी ज़िंदगी में मेरी चूचियाँ किसी ने ऐसे जोर से नहीं मसली थीं। बारिश का ठंडा पानी अब मेरी खुली हुई गाँड पे गिर रहा था और मेरी गाँड का छेद शायद उसे साफ़ दिख रहा था।

"एकदम टाईट गाँड है तेरी... आदिती राँड लगता है किसी ने आज तक तेरी गाँड ली नहीं तुझे पता है ना आदिती... इसलिए ही तू साली ऐसी टाईट साड़ी और यह उँची एड़ी के सैंडल पहनती है?

“नहीं नहीं यह सब गलत है... मुझे प्लीज़ जाने दो" मैं बहुत छटपटाई उसकी पकड़ से बाहर निकलने को लेकिन वोह बहुत ताकतवर था। उसने मुझे फिर मेरे मम्मों को दबाते हुए अपनी और खींचा। इस बार मुझे महसूस हुआ कि उसका लंड अब मेरी कमर पे रेंग रहा था और उसके आँड मेरी गाँड को छू रहे थे।

"तेरे मर्द के पास ऐसा लंड ही नहीं है कि तेरी चूत को शाँत कर सके.. .है ना आदिती?" उसकी गरम साँसों ने जो कि मेरे गले को छू रही थीं, मुझे भी अंदर से काफ़ी गरम कर दिया था.. जो कि एक सीधा संदेश मेरी चूत को दे रहा था कि "ले ले आदिती ले ले"। लेकिन मेरा दिमाग उसके लम्बे और मोटे लंड को देख कर सहम गया था। एक बार फिर से मैंने उसकी गिरफ़्त से भागने की बेकार कोशिश की और साथ ही मैंने अपनी टाँग चला कर अपने हाई हील सैंडल से उसके लम्ड पे वार करने की कोशिश की पर वोह पहले ही सम्भल गया और मेरे सैंडल के हील की चोट सिर्फ़ उसकी जाँघ पे पड़ी। अपनी जाँघ पे मेरी हील से पड़ी खरोंच को देख कर वोह बहुत गुस्से में आ गया और उसने मेरे सर को फिर से कार के हुड पे पटका और बोला, "आदिती... अगर तूने हिलना बँद नहीं किया तो ऊपर वाले की कसम अबकी बार मैं अपना लंड तेरी इस कच्ची कुँवारी टाईट गाँड में घुसेड़ के उसका कचुम्बर बना दूँगा। अगर तू यह समझती है कि मैं झूठ बोलता हूँ तो अपने आप ही तस्सली कर ले"

मैं बर्फ़ की तरह उस जगह पे ही जम गयी। "कहाँ चाहिये तुझे... चूत में या गाँड में।" उसका लंड मेरी गाँड के छेद को दस्तक दे रहा था। "नहीं नहीं। प्लीज़ मेरी गाँड में मत डालो..." मैं चिल्लाई।

"कहाँ चाहिए बोल ना रंडी चूत में य गाँड में"

"नहीं" मैं रो पड़ी। मेरे आँसू मेरे गालों पे बहने लगे "मेरी चूत में... चूत में प्लीज़... मेरी चूत में मेरी चूत में डालके उसे चोदो" मैं

गिड़गिड़ाई। मेरे होंठ काँप गये उसे यह कहते हुए कि तुम मेरी चूत में अपना लंड डाल दो। वोह अपना लंड मेरी गाँड से चूत के छेद तक नीचे–ऊपर ऊपर–नीचे कर रहा था। मैं घबरा गयी थी। उसने फिर से मेरा सर कस के पकड़ के कार के हुड से दबाके रखा था। एक बार फिर उसने अपने लंड के सुपाड़े को मेरी गाँड के छिद्र से दबाया।

मैं फिर चिल्लाई, "प्लीज़... मेरी गाँड नहीं मेरी चूत में डालो"

इस दौरान उसने मेरी चूचियों को कभी नहीं छोड़ा था और वोह लगातर उन्हें दबाये जा रहा था। एक सेकँड रुकने के बाद उसने अपने लंड को मेरी चूत के मुँह पे सटा दिया और एक झटके के साथ उसके अंदर डाल दिय। उसके कुल्हों के झटके ने मेरे नीचे वाले हिस्से को कार के ऊपर उठा लिया था।

मैं जोर से चिल्ला उठी। उसने धीरे से फिर अपना लंड मेरी चूत से निकाला और फिर झटके से डाल दिया। उसने अब मेरे बाल छोड़ दिए थे और अपना हाथ मेरे कुल्हों पे रख दिया था। अब वोह एक पागल हैवान की तरह मेरी चूत के अंदर बाहर अपना लंड पेल रहा था और मैं उसके हाथों में एक खिलोने की तरह खेली जा रही थी। उसकी आवाज़ें मुझे सुनाई दे रही थी। वोह एक जंगली जानवर की तरह कराहा रहा था। वोह ऐसे मेरी चूत का पूरा लुत्फ़ उठाये जा रहा था मनो ज़िंदगी में पहले चूत देखी ही ना हो। "आआघहह आहहहघहह कुत्तिया देख मेरा लंड कैसे जा रहा है तेरी चूत में देख वोह कैसे फाड़ रहा है तेरी इस चूत को... देख रंडी देख।" मैंने बहुत

कोशिश की कि उसको अपनी चुदाइई में समर्थन ना करूँ पर मैंने कभी अपने आप को इतना सम्पूर्ण नहीं पाया था ज़िंदगी में। मेरी चूत ने उसका पूरा लंड खा लिया था और फिर मुझे महसूस हुआ कि मेरी चूत ने मुझे धोका देना शुरू कर दिया है और उसके लंड के आसपास एक दम सिकुड़ गयी है जैसे कि वोह उसे पूरा चूस लेना चाहती हो। काम–वासना के आनन्द क पूरा समँदर मेरे अंदर उमड़ पड़ा था। पता नहीं मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा था। अब उसने मुझे कार के बोनेट पे झुका के पूरी लिटा दिया और मेरी रसभरी चौड़ी चूत को तेजी से चोदने लगा। जब भी वोह मेरे अंदर समाता था तब मेरी चूत उसके लंड को गिरफ़्त में लेने की कोशिश करती थी और उसके आसपास टाईट हो जाती थी। हमारे भीगे बदन क एक–दूसरे से टकराने ने मुझे बहुत कामोत्तेजित कर दिया था। उसकी आवाज़ अब एक घायल हुए भेड़िये जैसी हो गयी थी, जैसे उसे दर्द हो रहा हो।

"मममम..... आआआहहह..... बहुत मज़ा आ रहा है तुझे चोदने में..आहहह आदिती कितनी ही पढ़ी–लिखी आधुनिक दिखने वाली औरतों को चोदा है... आहहह पर तेरे जैसी कोई नहींईईई "

वोह बड़ी तेज़ रफ़्तार से अपना मोटा काला लंड मेरी चूत की गहराईयों में पेल रहा था। जब जब वोह अंदर पेलता था मेरा शरीर कार के हुड पे ऊपर खिसक जातस था। उसके लंड का भार मेरी क्लिट को मसल रहा था। मेरी सूजी हुई क्लिट में अजीब सी चुभन और सेनसेशन थी। "ओहहह नहींईईई आहहहहह... ओहह... ओहहहह माँआआआ.." मैं झड़ने लगी थी और मेरी चूत थरथराने

लगी थी। "आह हा हाह हाह हाहाह "

उसे पता चल गया था कि मैं झड़ चुकी हूँ और वोह हँसने लगा। "मुझे मालूम है तुझ जैसी चुदासी औरतों को बड़े और मोटे लंड बहुत पसँद होते हैं हर शहरी आधुनिक औरत को लंड अपनी चूत में लेके अपनी चूत का भोंसड़ा बनाना पसँद होता है.. तू उनसे कोई अलग नहीं है। तू भी सब मॉडर्न औरतों की तरह चुदासी है। साली अगर तुम औरतों को मेरे जैसे देहातियों के तँदुरुस्त लंड मिल जावें तो तुम हमरी राँडें बन के रहो। तुझे तो अपने आप पे शर्म आनी चाहिए रंडी कि मेरे इस लंड के सैलाब में तेरी चूत जो झड़ गयी"

मुझे अपने आप से बहुत घिन्न आने लगी और मन ही मन उसपे बहुत गुस्सा आया कि उसने मेरी चूत फाड़ के उसे झड़ने पे मजबूर कर दिया। उसने अपना लंड मेरी चूत में से निकाल के मेरी गाँड पे रख दिया। मैं तो जैसे नींद से जाग उठी हूँ और फिर काँप गयी जब मुझे मेरी गाँड के छेद पे धक्क लगा।

"यही तो सवाल था मेरी राँड... तुझे मेरा लंड अपनी चूत में पसँद है या फिर मैं उसका नमूना तेरी इस कसी हुई गाँड को भी दिखाऊँ... बोल कुत्तिया बोल।"

"नहींईईईईईई... प्लीईईईईज़ नहीं मेरी गाँड नहीं..." मैं चिल्लायी।

"क्यों साली। टाईट साड़ी और ऊँची हील की सैंडल पहन के बहुत गाँड मटका मटका के चलती है... ले ना एक बार मेरा मूसल अपनी

गाँड में... तेरी गाँड को भी पता चले कि ऐसा मस्त लंड क्या होता है" उसने गुर्रा के कहा।

मैं उसके सामने बहुत गिड़गिड़ायी। वोह बेशर्मी से हँसते हुए मेरे मम्मों को मसलता रहा। मेरी चूंचियाँ मानो हिमालय की चोटियों की तरह तन गयी थी। उसने चूचियाँ गरम कर के ऐसी कठोर बना दी थीं कि अगर ब्लाऊज़ पहना होता तो शायद उसके सारे हुक टूट गये होते।

"प्लीईईई...ज़ज़ मेरी चूत में डालो अपना काला मोटा लंड प्लीज़ उसे फाड़ दो बना दो उसे भोंसड़ा प्लीज़... लेकिन मेरी गाँड मत मारो। मैं तुम्हारी राँड बनके रहूँगी। तुम कहोगे तो तुम्हारे दोस्तों से भी चुदवाऊँगी लेकिन मेरी गाँड को बक्श दो... प्लीज़ मेरी चूत को चोदो। मुझे बहुत पसँद है की तुम्हारा लंड मेरी चूत में जाके उसका भोंसड़ा बना दे... प्लीज़ मुझे अपने लंड से चोदो... मेरी चूत को चोदो..." मुझे पता नहीं एक औरत कैसे यह सब कह सकती है किसी अजनबी मर्द को कि वोह अपने लंड से उसकी चूत का भोंसड़ा बन दे। पता नहीं मेरे मुँह से यह शब्द कैसे निकल आये... क्या यह मेरा डर था या फिर मेरी चूत ही थी जो अपील कर रही थी।

"बढ़िया मेरी राँड। मैं यही सुनना चाहता था" और उसने एक ही झटके में अपने काले मोटे लंड को मेरी फुदकती हुई चूत में घुसा दिया। उसके ज़ोरदार झटके ने मेरी सारी हवा निकाल दी थी। ऐसा लगा कि उसका लंड सीधा मेरे गर्भाशय को छू रहा हो। वोह अब ज़ोर–ज़ोर से मेरी चूत के अंदर बाहर हो रहा था। उसके लंड ने मेरी

चूत को एकदम चौड़ा कर दिया था और मेरी चूत उसके इर्द–गिर्द कवच के माफ़िक चिपक गयी। उसकी जोरदार चुदाई ने मेरी चूत को सातवें आसमान पे पहुँचा दिया था। "पुच्च.. पुच.. पुच्च..." जैसी आवाज़ें आ रही थीं जब उसका लंड मेरी चूत से अंदर बाहर हो रहा था।

"आहहहह आहहहह आहहह आदिती मैं अब तेरी चूत को अपने लंड के गाढ़े रस से भरने वाला हूँ" वोह गुर्राया।

"प्लीईईईईईईज़ ऐसा मत करनआआआआ मैं तुम्हारा सारा रस पी लूँगी प्लीज़ मेरी चूत में अपना रस मत डालना मैं प्रेगनेंट होना नहीं चाहती हूँ"

उसका लंड अब बिजली कि तरह मेरे अंदर बाहर हो रहा था और जोर–जोर से अवाज़े निकालता था। मेरी चूत अपने चूत–रस से एक दम गीली हो गयी थी और क्लिट तो मानो सूज के लाल–लाल हो गयी थी। मेर चूत–रस चू कर मेरी जाँघों पे बह रहा था और बारिश के पानी में मिल रहा था। अब उसने मुझे मेरे बालोन से खींच के कार के हुड से नीचे उतारा और अपने सामने खड़ा कर दिया । मैं अपने आप ही उसके कुल्हों को अपनी और खींच रही थी और उसे झटके दे रही थी।

"आहहहह... आहहह और तेज... और तेज आदिती... और तेज चोद मुझे... और तेज"

मैं जैसा वो कह रहा था वैसा करने लगी और एक राँड की तरह झटके देने लगी। मुझे अपने आप पे बहुत शर्म आने लगी थी। मैं एक राँड बन गयी थी... उसकी राँड मैं क्यों नहीं रूकी मैं रुकना नहीं चाहती थी।

"मैं अब झड़ने वाला हूँउँउँ छिनाल मैं तेरी चूत में झड़ने वाला हूँ मेरे साथ तू भी झड़ जाआआआ... ।

उसने कस के अपना एक हाथ मेरी कमर में डाल के एक जोर का झटका दिया और उसका लंड मानो मेरे गर्भाशय तक पहुँच गया। "आआआहह... आआआहहह..” वोह चिल्लाया और मुझे थोड़ा सा पीछे ठेल के मेरी गाँड कार के बोनेट पे टिका दी।

जब उसने अपने रस की पहल धार मेरी चूत की गहराई में छोड़ दी तो उसकी पहली धार के साथ ही मैं भी झड़ गयी। "आआआहहहह.... आआआघहह..ओहहह... नहींईंईंई..." मेरी चूत उसके लंड के आसपास एकदम सिकुड़ गयी। उसके लंड–रस की दूसरी धार भी मुझे मेरे चूत के अंदर महसूस हुई। जब उसका लंड अपने रस से मेरी भूखी चूत को भर रहा था, तब वोह जोर जोर से दहाड़ रहा था और चिल्ला रहा था। वोह लगातार अपना रस मेरी चूत में डाल रहा था। मेरी टाँगों में ज़रा भी ताकत नहीं बची थी और मैं अब बोनेट पे टीकी हुई थी। मेरी टाँगें और बाहें हवा में झूला ख रही थीं और उसका मोटा काला लंड मेरी चूत में अपना रस भर रहा था। वोह आखिरी बार दहाड़ा और मेरे ऊपर हँफ़ते हुए ढल गया। वोह वहाँ बोनेट पे मेरे ऊपर उसी स्थिति में कुछ पल पड़ा रहा और उसका

लंड धीरे–धीरे मेरी चूत में से अपने आप बाहर आने लगा। उसका गरम–गरम लंड–रस मेरी चूत में से बह कर बाहर टपक रहा था।

"मममम.... सच मुच साली तू सबसे चुदास निकली... तेरे जैसी कई औरतों को चोदा है लेकिन तेरे जितना मज़ा मुझे किसी ने नहीं दिया..." वोह हँसते हुए कहता गया और अपनी पैंट पहन के मुझे नंगी हालत में छोड़ के चल दिया।

मैंने तब अपने कपड़ों की खोज की। ब्लाऊज़ और पैंटी के तो उसने पहनने लायक ही नहीं छोड़ा था, फट कर चिथड़े ही हो गये थे। मैं अपना बरसात में भीग हुआ पेटीकोट पहना और फिर किसी तरह गीली साड़ी लपेटी। चूत तो अंदर नंगी ही रह गयी थी पैंटी के बिना। फिर अपना आँचल सीने पे ले आयी। अंदर तो सिर्फ़ ब्रा थी। फिर कार मे बैठ के चल पड़ी। अच्छी बात यह थी कि उस दिन घर में कोई नहीं था। इसी लिए किसी ने मुझे उस हालत मे नहीं देखा और किसी को मेरे रेप के बारे में कुछ पता भी ना चला।

।।।।।। समाप्त।।।।।।